आंदोलन अन्ना हजारे और हम

अन्ना जी का अंदोलन और सरकार दो गुटो मे बंटकर मोर्चा सम्हाल चुके हैं। टकराव शुरू हो चुका है। टकराव का स्वरूप क्या होगा और परिणाम क्या होगा यह भविष्य मे पता चलेगा किन्तु धीरे धीरे अपनी अपनी भूमिकाएँ स्पष्ट करने का समय आ गया है । हम लोग लम्बे समय से लोक स्वराज्य की मांग उठाते रहे हैं। इसलिये हमारे लिये भी उचित है कि हम अपना मत क्यक्त करे।

अन्ना जी के नेतृत्व मे प्रारंभ होने वाले आंदोलन मे हमारी सहभागिता बिल्कुल नहीं है क्योकि हम भ्रष्टाचार के लिये न तो सत्तासीन व्यक्ति को दोषी मानते है न ही सरकार को। हमारी नजर मे भ्रष्टाचार का कारण वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था है जो लोक और तंत्र के बीच लगातार दूरी बढाती जा रही है। जितना ही लोक को कमजोर करके तंत्र शक्ति सम्पन्न होगा उतना ही अधिक भ्रष्टाचार बढेगा और भ्रष्ट तंत्र भ्रष्टाचार रोक ही नहीं सकता । हमारा मानना है कि तंत्र ने अपनी सुरक्षा के लिये संविधान पर कब्जा कर लिया है और संविधान को ढाल बनाकर वह लगातार मजबूत होता जा रहा है। संसद, न्यायपालिका, कार्यपालिका आदि के विभाजन तो लोक को भ्रम मे डालकर रखने वाले तंत्र के भाग मात्र है। अतः इस पूरे संघर्ष के तीन चरण होने चाहिये थे । (1) राइट टू रिकाल (2) ग्राम गणराज्य (3) संविधान की मुक्ति । जब तक संविधान पर तंत्र का एकाधिकार होगा तब तक हम जीत नही सकते क्योकि संविधान संसद का खिलौना है और हम सबका आदर्श।

यह लडाई राइट टू रिकाल से शुरू होनी थी किन्तु लोकपाल से शुरू हुई । यहॉ तक कि न तो सरकारी लोकपाल बिल मे नियुक्त किये जाने वाले लोकपाल को वापस बुलाने मे जनता की कोई भूमिका है न ही जन लोकपाल बिल मे । अतः हम इस संघर्ष को लोक स्वराज्य संघर्ष नही मानते । यही कारण है कि हम इसमे सहभागी नहीं है।

फिर भी इस आंदोलन को हमारा पूरा पूरा सहयोग है क्योकि इस आंदोलन के माध्यम से लोक और तंत्र के बीच एक ध्रुवीकरण की शुरूआत हुई है। इस आंदोलन ने एक नई बहस छेड दी है कि लोकतंत्र का अर्थ लोक नियुक्त तंत्र तक ही सीमित है या लोक नियत्रित तंत्र तक जायगा। इस आंदोलन के द्वारा तंत्र के एकाधिकार को चुनौती तो मिली है तभी तो आज तंत्र के सभी सिपाही अपनी अपनी बैरको से बाहर आकर संघर्ष की तैयारी करने लगे है। मनमोहन सरीखा इमानदार और धैर्यवान व्यक्ति भी तंत्र के समक्ष लोक के सशक्तिकरण से विचलित और चिन्तित है। उनके सिपाही कपिल सिव्वल मनीष तिवारी तथा कुछ अन्यो ने अन्ना और उनकी टीम के लिये जैसे स्तरहीन शब्द प्रयोग किये उनसे प्रधानमंत्री की सहमति भी स्पष्ट होती है कि वे चाहे सब तरह इमानदार हो किन्तु वे भी तंत्र के अधिकारों मे कटौतो के लिये तैयार नही। इसलिय हम लोक और तंत्र के बीच प्रारंभ इस संघर्ष मे अन्ना टीम के आंदोलन का सहयोग कर रहे है।

हम अन्ना की टीम का पूरा समर्थन करते है । भारत मे तंत्र द्वारा बंधक बनाकर रखे गये संविधान मे भी भारत के हर नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। अब तक अन्ना की टीम ने न तो कोई असंवैधानिक हरकत की है न ही कोई हिंसा की भाषा हो बोली है। अंहिसक तरीके से हमे जनमत जागरण के पूरे पूरे अधिकार प्राप्त है। सरकार ने जिस प्रकार अन्ना के विरूद्ध योजना बनाई वह तो पूरी तरह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर भी कुठाराधात है। अन्ना ने जब तक कोई आंदोलन शुरू नहीं किया उसके पूर्व ही अन्ना के उपर तंत्र द्वारा कानून के डंडे बरसाना पूरी तरह गलत था। उन्होने सरकारी लोकपाल बिल के विरूद्ध जनमत जागरण मात्र किया था। जब वह जनमत जागरण किसी आंदोलन की दिशा मे जाय तब आप उस पर कानूनी कार्यवाही कर सकते है किन्तु जिस प्रकार सरकार भयभीत होकर कदम उठा रही है वे कदम तो वास्तव मे आपात्काल पूर्व के कदमों की शुरूआत है। यही कारण है कि हम अन्ना की टीम का पूरा पूरा समर्थन करते है।

मुझे पूरा पूरा विश्वास है कि यह जन लोकपाल बिल आंदोलन लोक और तंत्र के बीच अधिकारो के पुनर्विभाजन का पहला चरण होगा। इसका दूसरा चरण राइट टू रिकाल, तीसरा ग्राम गणराज्य व्यवस्था और चौथा संविधान की मुक्ति से पूरा होगा और जब भारतीय संविधान तंत्र के असीम अधिकारो से मुक्त होक लोक और तंत्र का साझा दस्तावेज बन जायगा तब भारत का लोक तंत्र लोक स्वराज्य की दिशा मे चलना शुरू कर देगा। यही कारण है कि हम लोकपाल आंदोलन मे सहभागी न होते हुए भी उसके सहयोगी भी है और समर्थक भी।मेरा आप सब साथियो से निवेदन है कि अन्ना को प्रतीक मानकर जो शुरूआत हुई है इस संघर्ष मे हम अधिक से अधिक अन्ना की टीम को मजबूत करे। साथ ही सतर्क रहे कि यह संघर्ष आजादी की दूसरी लडाई के रूप मे खडा हो । जिसमे लोक और तंत्र के बीच निर्णायक ध्रुवीकरण हो और वह लोक के पक्ष मे हो ।

(1)सिद्धार्थ शर्मा बैगलोर कर्नाटक

लोकतंत्र दो शव्दो का जोड है। लोक एवं तंत्र। जब तंत्र , लोक–नियंत्रित होता है तब वह लोक तंत्र कहलाता है। पर जब तंत्र, लोक को नियंत्रित करने का षणयंत्र रचने लगता है तब वह ठोकतंत्र बन जाता है। क्योकि लोक को तंत्र, भय लोभ या बल प्रयोग से ही काबू मे रख सकता है। पहले बाबा रामदेव और अब अन्ना हजारे मामले मे शासन ठोकतंत्र के रूप मे उभरा है। सौभाग्य से भारत की जनता इक्कीसवीं सदी मे जी रही है, सामंतवादी सदी मे नही। देशभर के हजारो स्थानो पर स्वयंभू विरोध प्रदर्शन इसका जीवन्त उदाहरण है।

भारत के संविधान की उद्देशिका का प्रारंभ ही '' हम भारत के लोग'' से होता है। आश्चर्य है कि ''हमारे'' संविधान को संसद नाम की एक छोटी सी इकाई मे बैठे मुट्ठी भर लोग मनमाना बदलते रहते है। कहने का तो '' हम भारत के लोग'' संविधान से बडा है, पर वास्तव मे संसद के '' हम'' कैदी है। संसद ने निर्णय के ''हमारे'' सारे अधिकार '' हम'' से छीनकर अपने पास बंधुआ रख लिये है और संसद का यह एकपक्षीय शक्तिशाली होना ही आजाद भारत की सभी समस्याओ की जड है।

अन्ना हजारे के समर्थन मे खडी जनता को देखकर कोई यह गलतफहमी न पाल ले कि यह एक व्यक्ति के पक्ष मे आंधी है। सच तो यह है कि भीषण असंतोष है, संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली पर । संसद भी इसे समझ चुकी है। इसलिये तो संसद मे प्रधानमंत्री ने इसे संसदीय लोकतंत्र को कमजोर करने की साजिश कहा। अन्ना तो केवल इसके प्रतीक मात्र है और भ्रष्टाचार उन्मूलन विधेयक जनलोकपाल केवल इसका प्रथम चरण है।

दूसरे चरण मे देश की जनता प्रतिनिधि वापसी (राइट टू रिकाल) की स्वाभाविक मांग करेगी। क्योकि वर्तमान प्रणाली वोटर रूपी शाकाहारी के सामने विभिन्न पशु पक्षी, मत्स्य के स्वादिष्ट मांस परोसकर उनमे से एक को खाने की बाध्यता जैसी है। उपर से उसे वमन करने की भी मनाही है।

तीसरे चरण मे यह मांग ग्राम गणराज्य पर जायगी। संविधान की धारा 243 ग्राम सभा /नगरपालिका के गठन को आवश्यक ठहराती है। पर इसी धारा के उपबंध 'क' तथा 'ब' इन संवैधानिक इकाइयों को शक्ति प्रदान करने या न प्रदान करने की भी छूट देता है। इसीलिये आज स्थानीय निकाय बन्ध्यापुत्र बनकर रह गये है। इस विडम्बना को दूर करने के लिये लोग सातवी अनुसूची मे संघ राज्य, समवर्ती सूची के साथ स्थानीय निकाय सूची की भी मांग करेंगे।

चौथे और अंतिम चरण मे देश संविधान की मुक्ति की मांग उठाएगा। आज संविधान , तंत्र का बंधक बनकर रह गया है। तंत्र अपने सभी गलत काम संविधान को ढाल बनाकर ही करता है। पहले संविधान को संशोधित कर उसे मन मुताबिक बनाता है, फिर उसी संविधानर की दुहाई देकर अनाप शनाप कानून जनता पर ठोक देता है। आज विश्वभर मे शायद भारत एकमात्र राष्ट्र है जहॉ का संविधान उसके नागरिकों की सहमति के बिना ही सशोंधित होता रहता है। आश्चर्य है कि केवल सदन मे उपस्थित सांसदो के दो तिहाई बहुमत से हमारा संविधान पर भर मे सांसदो की इच्छा अनुसार संशोधित किया जा सकता है।
संसद से संविधान की मुक्ति होने पर ही हम '' प्रतिनिधि लोकतंत्र '' रूपी राक्षस से मुक्त हो, '' सहभागी लोकतंत्र '' रूपी रामराज्य को पाएगे। यही भारत की वर्तमान के ठोकतंत्र से भविष्य के लोकतंत्र तक पहुँचने की नियति है। मार्ग मे जन लोकपाल राइट टु रिकाल , ग्राम– गणराज्य , संविधान की मुक्ति आदि निश्चित पडाव भर है।

(2) श्री वैधराज आहूजा, भानुप्रतापपुर, कांकेर, छत्तीसगढ़

प्रश्न– आपने लिखा है कि समान नागरिक संहिता और हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा एक दूसरे के विपरीत है। मैं इस कथन को नहीं समझा। स्पष्ट करें। आप यह भी बतायें कि कश्मीर मामलों में भारत सरकार इतनी कमजोर क्यों है।
उत्तर– समान नागरिक संहिता में देश की राजनैतिक व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार प्राप्त होते हैं जबकि हिन्दू राष्ट्र में नहीं हो सकते। समान नागरिक संहिता में भारत एक सौ इक्कीस करोड़ व्यक्तियों का देश होगा और हिन्दू राष्ट्र में धर्मों जातियों का संघ। यह कैसे संभव है कि प्रत्येक व्यक्ति के लिये समान कानून भी हो और हिन्दू मुसलमान इसाई के लिये अलग–अलग भी। यह संघ परिवार का दुष्प्रचार है कि वे दो मुंही बातें एक साथ कहते रहते हैं। व्यक्ति और नागरिक बिल्कुल भिन्न होते हैं और दोनों के अधिकार भी अलग–अलग होते हैं और संहिता भी। व्यक्ति समाज का अंग होता है, उसकी स्वतंत्र आचार संहिता होती है, उसके अधिकार मौलिक, प्राकृतिक स्वाभाविक होते हैं जबकि नागरिक किसी संवैधानिक व्यवस्था से बंधा होता है, उसके संवैधानिक अधिकार होते हैं, प्रतिबद्ध नागरिक संहिता होती है। मैं चालीस वर्षों से कह रहा हूँ तथा लिख रहा हूँ किन्तु आज तक किसी व्यक्ति या संगठन ने इस संबंध में कोई उत्तर नहीं दिया न ही मेरे कथन को गलत कहा। किन्तु वे संगठन अपना असत्य प्रचार आज तक लगातार जारी रखे हुए हैं। इस्लामिक देशों में न समाज होता है न धर्म। इस्लामिक देशों में मूल अधिकार भी नहीं होते। वहॉ आचार संहिता और नागरिक संहिता में कोई अन्तर नहीं। साम्यवादी देशों में भी दोनों के बीच फर्क नहीं। किन्तु लाखों वर्षों की हिन्दू जोवन पद्धति और स्वतंत्रता के बाद भी षरतीय श्शासन व्यवस्था में धर्म समाज और राज्य बिल्कुल अलग–अलग होते हैं। भारत में व्यक्ति और नागरिक भी अलग अलग हैं। संघ परिवार के लोग इस्लाम साम्यवाद के अन्ध विरोध की नासमझी में दोनों को एक करने की भूल कर रहे हैं।

मुझे तो आश्चर्य हुआ कि सुब्रमन्यम स्वामी जैसे विद्वान ने भी ऐसा ही एक लेख लिखकर भ्रम पैदा करने की नासमझी की है। स्वामी जी दो हजार पांच की दिल्ली बैठक में थे जिसमें मैंने इस मुद्दे पर विस्तृत चर्चा की थी। आज तक उन्होंने कभी स्पष्ट नहीं किया कि व्यक्ति और नागरिक एक होते हैं या भिन्न। उन्हें स्पष्ट करना चाहिये कि समान नागरिक संहिता तथा समान आचार संहिता एक है या भिन्न। उन्होंने एक ही लेख में समान नागरिक संहिता शब्द भी लिख दिया और हिन्दू राष्ट्र भी। यदि कोई और व्यक्ति ऐसा लिखता तो उसका अज्ञान भी कहा जा सकता है किन्तु स्वामी जी जैसा व्यक्ति ऐसा लिखे तो उन्हें यह बात स्पष्ट करनी ही चाहिये। यदि मैं गलत होउंगा तो भूल सुधारूंगा और भविष्य में ऐसा नहीं लिखूंगा।

गोहत्या बन्दी का कानून उस देश में नहीं बन सकता जहॉ समान नागरिक संहिता लागू है। यह तो संघ परिवार का सौभाग्य है कि भारत में आज तक समान नागरिक संहिता लागू नहीं है। समान नागरिक संहिता के अभाव में आप हिन्दू राष्ट्र भी मांग सकते हैं और गोहत्या बन्दी भी। किन्तु समान नागरिक संहिता और गोहत्या बन्दी की मांग एक साथ करना तर्क हीन है, ना समझी है। आप से जिस व्यक्ति ने यह प्रश्न किया है उन्हें आप मेरा उत्तर बताकर उनसे मेरी बात करा दीजिये। मैं इस विषय पर स्वतंत्र विचार मंथन की मांग करता हूँ।

कश्मीर संबंधी भारत सरकार की नीति सामयिक दिखती है। दुनिया इस्लामिक विस्तारवाद के खतरे से जूझ रही है। इस विस्तार वाद ने आतंकवाद का मार्ग पकड़ लिया है। साम्यवाद जब तक पूंजीवाद के साथ प्रतिस्पर्धा में था तब तक साम्यवाद साम्प्रदायिकता से दूरी बनाकर रखता था किन्तु जब से साम्यवाद समाजवाद पराजित हुआ है तब से उसने इस्लामिक साम्प्रदायिकता के साथ समझौता कर लिया है। अनेक देशों की सरकारें पूरी तरह उग्रवादी इस्लाम से संचालित हैं किन्तु अनेक मुस्लिम बहुल देशों की सरकारें अब तक बीच का मार्ग अपनाये हुए हैं। उन्हें दुहरा संकट झेलना है। वे उग्रवाद का विरोध खुलकर नहीं कर पातीं क्योंकि उन्हें जन विद्रोह का खतरा है। दूसरी ओर वे खलकर उग्रवाद के साथ भी नहीं हो सकतीं क्योंकि वे विश्व जनमत से अलग थलग पड़ जायेंगी। पाकिस्तान की सरकार एक ऐसी ही बफर स्टेट है जो इस्लामिक विस्तार वाद में आतंकवाद की भूमिका के बीच का मार्ग तलाश रही है।

कश्मीर का मसला किसी भी रूप से पाकिस्तान की चाहत नहीं है। वह तो इस्लामिक विस्तारवाद की चाहत है जिसमें पाकिस्तान सरकार भी मजबूर है। जो लोग कश्मीर मामले को आधार बनाकर पाकिस्तान को केन्द्र बनाते है वे यह क्यों नहीं बताते कि भारत में लव जिहाद योजना पाकिस्तान सरकार की है या दुनिया भर के इस्लामिक विस्तारवाद की। सिमी को भी कई इस्लामिक देशों से धन मिलने की बात सुनी जाती है। मुझे समझ नहीं आता कि हम कश्मीर समस्या को इस्लामिक विस्तार वाद के साथ न जोड़कर पाकिस्तान के साथ क्यों जोड़ते हैं? यदि पाकिस्तान की वर्तमान बफर स्टेट का स्वरूप बदलकर आतंकवादियों के हाथ चला गया तो कश्मीर मामले में भारत को क्या लाभ होगा और हिन्दुत्व को क्या लाभ होगा? जो भाजपा कश्मीर को ताकत के बल पर निपटाने की बात करती है वही भाजपा छत्तीसगढ़ के बस्तर पर ही अपनी ताकत क्यों नहीं आजमा लेती? स्वाभाविक है कि छत्तीसगढ़ सरकार केन्द्र सरकार के साथ भी जुड़कर ही कुछ कर सकती है क्योंकि बस्तर की नक्सलवादी समस्या एक राष्ट्रीय समस्या बनती जा रही है। उसी तरह इस्लामिक विस्तारवाद से सिर्फ भारत ही प्रभावित नहीं है बल्कि यह तो विश्व समस्या है जिसके साथ किसी भी तरह की छेड़छाड़ विश्व जनमत को प्रभावित कर सकती है।

इस्लामिक आतंकवाद के विरूद्ध विश्व जनमत निर्माण योजना में भारत का भी योगदान आवश्यक है। किन्तु इस योजना में सबसे बड़ा बाधक है संघ परिवार। यह परिवार इस्लामिक विस्तारवाद के साथ सामूहिक संघर्ष से अलग रहकर ऐसी स्थिति का लाभ उठाना चाहता है। उसे पता है कि इस्लामिक आतंकवाद का भय भारत की हिन्दू बहुल जनता में यदि और व्यापक कर दिया जावे तो हिन्दू बहुमत उसके पीछे चलना श्शुरू कर देगा और वह भारत की सत्ता पर काबिज हो जायगा। संघ परिवार का यही राजनैतिक स्वार्थ भारत में इस्लामिक विस्तार वाद विरोध योजना में बाधा उत्पन्न कर रहा है। संघ परिवार हिन्दू समाज को अपने पीछे चलाने के लिये इतना व्यग्र क्यों हैं? क्यों नहीं वह हिन्दू समाज के पीछे चलने के लिये तैयार है? क्यों संघ परिवार इस्लामिक आतंकवाद को पाकिस्तानी आतंकवाद की दिशा में मोड़ता रहता है? क्यों वह भारत पाकिस्तान के संबंधों को हमेशा ही बिगाड़ते रहना चाहता है? संघ परिवार को इसका उत्तर देना चाहिये कि वह अपना राजनैतिक स्वार्थ छोड़ने के लिये तैयार क्यों नहीं है? अब वह समय गया जब हम हिन्दू समाज

के लोग भ्रम में पड़कर इनके पीछे–पीछे चल पड़ते थे। अब तो हम आंख खोलकर चलना चाहते हैं। इस्लामिक विस्तार वाद से दो–दो हाथ करने तो होंगे ही। अब तक संघ परिवार योजना का कोई परिणाम नहीं निकला है। अब संघ परिवार नई योजना बनने दे और वह ऐसी योजना में साथ दे तब कश्मीर समस्या भी सुलझ सकती है।

प्रिय बंधु

हम सबने पिछले तीस चालीस वर्षो मे अनेक विषयो पर विचार मंथन किया। सबने मिलकर अन्तिम रूप से एक नतीजा निकाला कि वर्तमान समय मे समाज व्यवस्था परिवार व्यवस्था कमजोर हो रही है तथा अनेक प्रकार की समस्याएँ बढ रही है। ऐसी अनेक समस्याओं के कारण, पहचान और समाधान पर न तो कोई सर्वसम्मत निष्कर्ष निकले न ही किसी सक्रियता की योजना बनी। किन्तु एक मुद्दे पर सर्व सम्मति थी कि लोक और तंत्र के बीच लगातार बढती जा रही दूरी घटनी चाहिये तभी समस्याओं के समाधान की शुरूआत संभव है। निणय अनुसार कार्य शुरू हुआ।

उक्त निष्कर्ष सर्व सम्मत था और तदनुसार क्रिया प्रारंभ हुई किन्तु इसके साथ ही सैकडो ऐसे भी मुद्दे थे जिसपर विचार मंथन तो चला किन्तु सर्व सम्मति नही बनी। ऐसे मुद्दो पर मुनि जी के व्यक्तिगत निष्कर्षो की एक पुस्तक नई दिशा के नाम पर प्रकाशित भी है। उनमे से कुछ मुद्दो पर छोटे छोटे कोटेशन्स तैयार हुए है जो आप तक प्रस्तुत है। आप इन कोटेशन्स के आधार पर पक्ष विपक्ष मे अपने विचार व्यक्त करे जिससे विचार मंथन आगे बढे । ध्यान रहे कि विचार मुनि जी के व्यक्तिगत है तथा इस पर विचार मंथन चलता रहेगा।यदि आप किसी कोटेशन का किसी रूप मे उपयोग करना चाहे तो कर सकते है। यदि कहीं दिवालो मे भी लिखना हो तो आप लिख सकतें है । (1) विचारों से नीतियॉ बनती है, नीतियों से व्यवस्था बनती है और व्यवस्था से चरित्र बनता है। किन्तु चरित्र से व्यवस्था नहीं बनती।

(2) मानवाधिकार आंदोलन प्रायः विदेशी धन से संचालित होते है जो हमारी व्यवस्था को छिन्न भिन्न करते रहते हैं।

(3)जब समाज विरोधी तत्वों तथा राज्य के बीच तालमेल हो जावे तब चरित्र निर्माण की दिशा छोड़कर समाज सशक्तिकरण का मार्ग पकड़ना चाहिये।

(4)मृत महापुरूषों के विचार बिना स्वयं समीक्षा और संशोधन के समाज तक पहुॅचाना घातक है क्योकि देश काल परिस्थिति अनुसार प्राथमिकताएँ . बदलती रहती है।

(5) ज्ञान व्यक्ति को आत्म निर्भर बनाता है और सुविधाएँ आश्रित राज्य, सुविधा विस्तार और धर्म गुरू कर्मकाण्ड तक सीमित रखते है।

(6) व्यक्ति व परिवार से विश्व तक की प्रत्येक इकाई उपर की इकाई को शक्ति देती है और नीचे वाली को सुरक्षा। भारत मे उपर की इकाइयां सुरक्षा की जगह गुलामी दे रही है।

(7) दुनिया मे चार व्यवस्थाएँ है (1)पश्चिम का लोकतत्र (2)इस्लाम का धर्मतंत्र (3) साम्यवाद का राज्य तंत्र (4) वैदिक काल की समाज व्यवस्था । दुर्भाग्य से भारतीय संविधान मे लोकतंत्र, धर्मतंत्र और राज्य तंत्र तो है किन्तु समाज व्यवस्था की इकाई परिवार व्यवस्था, ग्राम व्यवस्था संविधान से बाहर है।

(8) राज्य का कर्तव्य है कि वह अपना नियंत्रण समाज विरोधी तत्वों तक ही सीमित करे, समाज की स्वतंत्रता को सीमित न करे । भारत में उल्टा हो रहा है।

(9) आपातकाल में दो प्रवृत्तियॉ घातक होती है।

(1) राज्य द्वारा सुरक्षा की जगह सुविधा विस्तार।

(2) धर्म द्वारा विचार मंथन की जगह श्रद्धा विस्तार।

(10) विज्ञान आवश्यकता से अधिक भौतिकवाद मे झुका है और धर्म रूढिवाद मे । दोनो ही स्थितियॉ घातक है।

(11) शिक्षा की अपेक्षा ज्ञान का प्रभाव अधिक होता है। किन्तु भारत मे ज्ञान की जगह शिक्षा को ही महत्व दिया जा रहा है।

(12) महापुरूष सामान्य काल मे चरित्र निर्माण की शिक्षा देते हैं, विशेष काल में समझदारी का ज्ञान देते है तथा आपातकाल में हथियार उठाकर समाज को अनुकरण का मार्ग बताते है।

(13) ज्ञान कथा शराफत को समझदारी में बदलने का एक मात्र मार्ग है।

(14) ज्ञान कथा सुनने वाला न जीवन में आसानी से ठगा जाता है न कभी निराश होता है। किसी भी परिस्थिति में समाधान निकाल लेना उसका गुण बन जाता है।

(15) ज्ञान कथा, ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका, र्णोपदकपंण्बवउ वेबसाइट, मानसिक व्यायाम आदि एक दूसरे के पूरक हैं। सबका लक्ष्य एक है ''ज्ञान तत्व विस्तार'' और परिणाम है समझदारी ।

(16) ज्ञान कथा सुनिये और सुनाइये, सभी समस्याओं के समाधान का मार्ग पाइये ।

(17) समस्याओं के प्रणेता– कर, कानून, नेता

समाधान का आधार– ज्ञान तत्व विस्तार

(18) सब सुधरेंगे तीन सुधारे – नेता, कर, कानून, हमारे

(19) ज्ञान यज्ञ विशेष परिस्थिति मे, विशेष पद्धति से, विशेष व्यक्तियों द्वारा किया जाता है।

(20) परिवार व्यक्ति को सामूहिक अनुशासन और उत्तरदायित्व की ट्रेनिंग देने वाली पहली इकाई है।

(21) हिन्दुत्व धर्म प्रचार में तर्क का सहारा लेता है, इसाइयत धन, सेवा, और प्रेम का, इस्लाम

संगठन शक्ति का।

(22) हिन्दू संस्कृति दुनिया की एकमात्र संस्कृति है जिसने धर्म को संख्या विस्तार से नही जोड़ा। हिन्दुत्व ने अकेले ही धर्म परिवर्तन पर एक पक्षीय रोक लगाई। हिन्दुत्व को इससे बहुत नुकसान हुआ किन्तु उसे अपनी इस उदारता पर गर्व है। अन्य धर्मावलम्बी तो छीना झपटी मे लगे हुए हैं।

(23) गर्व से कहो हम हिन्दू है।

(24) दुनिया मे हिन्दू एकमात्र ऐसा जीव है जो नुकसान उठा सकता है कर नहीं सकता, अत्याचार सह सकता है कर नही सकता, गुलामी सह सकता है गुलाम बना नही सकता, धृणा कर सकता है पर आक्रमण नही।

(25) नुकसान उठाना, अत्याचार सहना, गुलामी सहना कायरता है और नुकसान करना, अत्याचार करना ,गुलाम बनाना अमानवीय। मुसलमानो और इसाईयो को हिन्दू सहृदयता पर गंभीरता से विचार करना चाहिये।

(26) हिन्दू कोड बिल बनाकर हमारे नेताओं ने हिन्दूओं की छाती में एक ऐसा कील ठोक दिया है

जो जीवन भर दर्द करता ही रहता है।

(27) हिन्दू संस्कृति आदर्शवादी, पाश्चात्य यथार्थवादी, इस्लामिक विस्तारवादी तथा भारतीय संस्कृति स्वार्थवादी मानी जा रही है।

(28) वर्तमान भारतीय संस्कृति में ''(1) न्यूनतम परिश्रम और प्रयत्न से अधिकतम लाभ प्राप्ति

(29) समाज सर्वोच्च है। राष्ट्र उसका एक अंग, राज्य सहायक, धर्म मार्गदर्शक है । राष्ट्र राज्य और धर्म द्वारा समाज को कमजोर करना घातक है।

(30)धर्म एक जीवन शैली है।संगठन का स्वरूप देना घातक एवं गलत है। इस्लाम ने संगठन बनाया । कुछ हिन्दू भी इस धर्म विरोधी काय मे संलग्न है।

(31) परिवार सशक्तिकरण समाज सशक्तिकरण की पहली इकाई है।

(32) समाज सशक्तिकरण के लिये ज्ञान यज्ञ परिवार से जुड़िये।

(33) दो मार्ग होते है (1) परिवार, गॉव, जिला ,प्रदेश ,देश, समाज

(2) परिवार, कबीला, जाति, धर्म, राष्ट्र , समाज । पहली व्यवस्था अधिक अच्छी होती है।

(34) परिवार व्यवस्था, समाज व्यवस्था टूट नहीं रही, योजना पूर्वक तोड़ी जा रही है और तोड़ने वाले ही सारा दोष समाज पर डाल रहे हैं

(35) धर्म में गुण, कर्तव्य, जीवन पद्धति प्रधान होती है। सम्प्रदाय में संख्या, अधिकार, संगठन।

(36) किसी उपासना पद्धति के आधार पर बने संगठन को सम्प्रदाय कहते है।

(37) धर्म परिवर्तन कराने के प्रयत्न सामाजिक एकता में बाधक हैं। ऐसे प्रयत्नों को कठोरता से रोकना चाहिये ।

(38)गुण प्रधान धर्म कभी बदल नही सकता । संख्या प्रधान धर्म ही बदलता रहता है।

(39) धर्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक है। विज्ञान निष्कर्ष निकालता है और धर्म समाज को तदनुसार प्रेरणा देता है।

(40) परिवारों की आन्तरिक व्यवस्था में धर्म का हस्तक्षेप भी घातक है और कानून का भी। उसे परिवार पर ही छोड़ देना चाहिये ।

(41) साम्प्रदायिकता का समाधान न सहिष्णता है न टकराव । इसका समाधान है समान नागरिक संहिता ।

(42) यदि मुसलमानों और इसाइयों को भारत से बाहर भी कर दे ंतो समाज की ग्यारह में से किसी एक भी समस्या का समाधान नहीं हो सकता । क्योकि व्यवस्था समस्याएँ पैदा कर रही है और हम समाधान व्यक्ति, धर्म या समाज में खोज रहे हैं।

(43) धर्म का संबंध आचरण से होता है और विज्ञान क विचार से

(44) आज कुछ साम्प्रदाश्कि संगठन गाय गंगा, मंदिर को धर्म बताकर हमारी भावनाओं को उभारना चाहते है जो घातक हैं

(45) हिन्दुत्व बचेगा तो गाय, गंगा, मंदिर की सुरक्षा संभव है किन्तु गाय, गंगा, मंदिर बच भी जावे और हिन्दुत्व न बचे तो इनकी सुरक्षा संभव नही ।

(46) धार्मिक कट्टरवाद इस्लामिक संस्कृति है। ऐसे लोग हमेशा घातक होते हैं चाहे वे दाढ़ी वाले हो या चोटी वाले ।

(47) वर्तमान समय में हिन्दुत्व, इस्लाम या इसाइयत की अपेक्षा संपर्ण धर्म खतरे में है क्योकि श्शराफत का मनोबल टूट रहा है तथा अपराध, धूर्तता या हिंसा का बढ़ रहा है।

(48) मजबूत का अत्याचार सहना और कमजोर पर करना'' गुण माने जा रहे हैं।

49) गर्व से कहो हम दो नम्बर है।

(50) समान आचार संहिता अलग होती है और समान नागरिक संहिता अलग । समान आचार संहिता को निरूत्साहित और समान नागरिक संहिता को लागू कर देना चाहिये ।

(51) आरक्षण समाज के लिये घातक होता है क्योकि वह व्यवस्था को भी कमजोर करता है तथा वर्ग विद्वेष भी बढ़ाता है।

(52) किसी कार्य के संभावित परिणाम का पूव आकलन और यथार्थ के बीच की दूरी ही सुख या दुख की मात्रा होती है।

(53) प्रकृति के अनसुलझे रहस्यों को ही भूत प्रेत तंत्र मंत्र जादू टोना कहते है। सुलझ गया रहस्य विज्ञान बन जाता है ।

(54) स्वदेशी का अर्थ स्वदेशी श्शासन व्यवस्था और स्वदेशी संविधान से होना चाहिये न कि स्वदेशी वस्त्र, भाषा या पेय पदार्थ से ।

(55) भारत में राजनैतिक सामाजिक कार्य में सक्रिय अधिकांश व्यक्ति या संगठन बिकाउ होते जा रहे है।

(56) हिंसा और अहिंसा का निर्णय परिस्थिति अनुसार करना चाहिये सिद्धान्त अनुसार नहीं । सैद्धान्तिक हिंसा या अहिंसा हमेशा घातक परिणाम देती है।

(57) प्रतिस्पर्धी, विरोधी और शत्रु बिल्कुल अलग अलग होते है तथा इनसे व्यवहार भी अलग अलग होना चाहिये। भिन्नता न समझने के घातक परिणाम होते है।

(58) कश्मीर समस्या राष्ट्रीय समस्या है सामाजिक समस्या नहीं । राजनीतिज्ञ समाज को धोखा देने के लिये ऐसी राष्ट्रीय या धार्मिक समस्याओं को आवश्यकता से अधिक तूल देते रहते है।

(59) महिला और पुरूष कभी अलग अलग इकाई के रूप में स्वतंत्र नहीं हो सकते । इन्हें स्वतंत्र इकाई मानना या बनाना हानिकारक है।

(60) दहेज कोई समस्या न होकर एक व्यवस्था है । पर्दा पथा या पुरूष प्रधानता भी व्यवस्था है, पुरूष अत्याचार नहीं । राजनीतिज्ञ अपने स्वार्थ वश इन्हें पुरूष अत्याचार कहता है।

(61) वर्तमान व्यवस्था श्शरीफों, गरीबों, ग्रामीणों, श्रमजीवियों के शोषण के उद्वेश्य से अपराधियों , पूँजीपतियों, बुद्धिजीवियों राजनेताओं का मिला जुला षडयंत्र है।

(62) आदर्श अर्थव्यवस्था गरीब, ग्रामीण, श्रमजीवी, किसान के पक्ष में होनी चाहिये किन्तु वर्तमान व्यवस्था अमीर ,शहरी ,बुद्धिजीवी उपभोक्ता वर्ग के पक्ष में है जो घातक है ।

(63) गरीब ग्रामीण श्रमजीवीउत्पादन तथा उनके उपभोग की वस्तुएँ कर मुक्त नियंत्रण मुक्त होनी चाहियें।

(64) शिक्षा पर भारी व्यय और गरीब, ग्रामीण ,श्रमिक उत्पादन उपभोग की वस्तुओं पर कर लगाना षडयंत्र है।

(65) अपने खेत के गन्ने से गुड़ बनाने पर रोक समाज को गुलाम बनाने की प्रक्रिया है । इससे उत्पादन घटेगा, मंहगाई आयेगी।

(66) उल्टी अर्थनीति –

कर	सबसीडी
(क) सरसों तेल 8 रू लीटर	मिट्टी तेल 8 रू लीटर
(ख) साइकिल 300 रू.	रसोई गैस 150 रू.
(ग) सभी कृषि उपज	शिक्षा
(घ) अपनी जमीन के पेड़	ट्रैक्टर
(च) श्रमिक उत्पादन	कृत्रिम उर्जा

(67) भारत में गामीण गरीब की अमीरी रेखा तेरह रू और शहरी गरीब की उन्नीस रू रखी गई है जो ग्रामीण अर्थ व्यवस्था के विपरीत है।

(68) सभी प्रकार के कर हटाकर तथा गरीबी रेखा से नीचे वालों को जीवन भत्ता देकर सारा कर कृत्रिम उर्जा पर डाल देना ही सर्वश्रेष्ठ समाधान है।

(69) आर्थिक असमानता तथा श्रम शोषण असंतोष का मूल कारण है।

(70) स्वतंत्रता के बाद सुराज्य का नारा समाज के साथ धोखा था । आज भी राजनेता सुराज्य के नाम पर धोखा देने में लिप्त हैं। अब हमें सुराज्य नहीं, स्वराज्य चाहिये।

(71) अव्यवस्था कुव्यवस्था से भी बुरी होती है । स्वव्यवस्था सुव्यवस्था से भी अच्छी होती है।

(72) विकास के प्रयत्न समाज को अधिक से अधिक गुलाम बनाकर रखने के प्रयत्नों के समान हैं ।

(73) वर्तमान में कानून का उल्लंघन करने वाले हर क्षेत्र में सफल है और पालन करने वाले पिछड़ रहें हैं।

(74) भारत की जनता को शान्ति और न्याय चाहिये तो सरकार उसे देती है कानून। कानून उसे और अधिक गुलाम बनाते जाते हैं।

(75) अठान्नवे प्रतिशत समस्याएँ सरकारी हस्तक्षेप और अनावश्यक कानूनों का ठल चतवकनबज है।

(76) भारत की कुल ग्यारह समस्याओं में से पांच का कारण राज्य की अति निष्क्रियता है और छः का राज्य की अति सक्रियता । समाधान है छः से राज्य का हटकर पांच में सक्रिय होना ।

(77) हड़ताले अपना न्यूशेन्स वैल्यू बढाने का आधार बनती जा रही है। हड़तालों को निरूत्साहित करना चाहिये ।

(78) लाभ के अवसरों का विकेन्द्रीयकरण होना उचित है, केन्द्रीयकरण नहीं । महिला आरक्षण लाभ के अवसरों को सक्षम परिवारो की ओर केन्द्रित करेगा, जो घातक है।

(79) वर्ग संघर्ष की कीमत पर महिला उत्थान का यह उचित समय नहीं है भले ही महिला उत्थान की कीमत पर वर्ग संघर्ष को रोकना पड़े।

(80) भ्रूण हत्या को बालक और बालिका में विभाजित करना बिल्कुल गलत भी है और अनावश्यक भी ।

(81) आतंकवाद न्याय के नाम पर शुरू होकर अत्याचार के रूप मे बदल जाता है । आतंकवाद से दूरी बनाना अच्छा है चाहे वह वामपंथी आतंकवाद हो या इस्लामिक कट्टरवाद या कट्टरपंथी हिन्दुत्ववादी ।

(82) भ्रष्टाचार नियंत्रण का प्रथम सूत्र है सरकारीकरण से अधिकतम मुक्ति। समाधान है निजीकरण या समाजीकरण ।

(83) किसी व्यक्ति के प्राकृतिक अधिकारों का उल्लंधन अपराध, सवैधानिक का उल्लंघन गैर कानूनी तथा सामाजिक का उल्लंघन अनैतिक होता है ।

(84) अपराध कुल मिलाकर पांच होते है (1) चोरी डकैती लूट (2) बलात्कार (3) मिलावट कमतौल (4) जालसाजी (5) हिंसा और आतंक । अन्य कोई कार्य अपराध नहीं होता । गैर कानूनी या अनैतिक हो सकता है। उक्त पांच को हम तीन नम्बर कहते है।

(85) वैश्यावृति, तस्करी, जुआ, शराब, बालश्रम, दहेज, आदिवासी–हरिजन कानून, छुआछूत, अपराध न होकर गैर कानूनी या अनैतिक कार्य हैं। हम इन्हे दो नम्बर कहते है।

(86) सभी सरकारें गैर कानूनी या अनैतिक कार्यो को अपराध में योजना पूर्वक शामिल करती हैं जिससे अपराधियों को संरक्षण मिले और आम आदमी का मनोबल टूटे।

(87) सम्पूर्ण समाज में तीन नम्बर वालों की आबादी दो प्रतिशत और दो नम्बर की अठान्नवे प्रतिशत होती है।

(88) सम्पन्नता, सुविधा, सम्मान तथा अधिकारों की लूट मची है। ऐसी संवैधानिक लूट का प्रयास है लोकतंत्र और हिसंक लूट का प्रयास है नक्सलवाद । दोनो ही समाज को गुलाम बनाकर रखना चाहते हैं। फिर भी नक्सलवाद में तानाशाही का खतरा अधिक रहता है।

(89) समाज में अपराधियों का प्रतिशत सिर्फ दो होता है। राज्य का दायित्व होता है दो प्रतिशत अपराधियों पर नियंत्रण । राज्य दो प्रतिशत पर नियंत्रण न करके अठान्नवे प्रतिशत पर अनावश्यक नियंत्रण करना चाहता है।

(90) किसी कार्य के परिणाम से प्रभावित व्यक्ति और कर्त्ता के बीच की दूरी का बढ़ना कार्य की गुणवत्ता के घटने का मुख्य कारण है।

(91) नेता बेइमान है, संत गुरू नाकाम है, हम सब आज गुलाम है,

अपराधी खुलेआम है, अब स्वराज्य का नारा दो, हम पर राज्य हमारा हो ।

(92) भारतीय संविधान पूरी दुनिया का सबसे खराब संविधान है यह तो वकीलो का स्वर्ग माना जाता है जिसमें सुरक्षा और न्याय के स्थान पर सिर्फ कानून ही कानून भरे पड़े है।

(93) समाज विरोधी तत्व बहुत मायावी होते है।

(94) पुराने जमाने में ज्ञान और त्याग को सर्वोच्च सम्मान प्राप्त था । बाद में धन या पावर को वह सम्मान मिलने लगा । अब गुण्डागर्दी, दादागिरी सर्वोच्च सम्मान का आधार बन रही है।

(95) साम्यवाद दुनिया की सबसे खतरनाक विचार धारा है। साम्यवाद जहॉ सत्ता में नही होता है वहॉ अधिकाधिक न्याय की भूख पैदा करता है और जहॉ सत्ता में होता है वहॉ अधिकार श्शून्य कर देता है।

(96) यदि राज्य अहिंसा या न्यूनतम हिंसा को आदर्श मानता है तो समाज मे हिंसा बढ़ती है। भारत को संतुलित हिंसा का मार्ग अपनाना चाहिये।

(97) तानाशाही के विरूद्ध संघर्ष मे हिंसा या अहिंसा पर विचार किया जा सकता है। लोकतंत्र मे सामाजिक हिंसा का कोई स्थान नहीं हो सकता ।

(98) लोकतंत्र मे हिंसा करना या हिंसा का समर्थन आतंकवाद है चाहे वह इस्लाष्मिक हो, नक्सलवादी हो या संघ परिवार प्रेरित।

(99) प्राथमिकता के अनुसार समस्याएँ पांच प्रकार की हैं (1) वास्तविक (2) कृत्रिम(3) प्राकृतिक (4) भूमंण्डलीय (5) भ्रम । भारत मे विपरीत क्रम से समाधान के प्रयत्न होते है।

(100) राष्ट्रीय भावना व्यवस्था में सहायक होती है और राष्ट्रवाद घातक । राष्ट्रवाद की अपेक्षा समाज सशक्तिकरण अधिक उपयुक्त है ।

(101) राजनीति एक व्यवसाय है जिसमें सारे पद और सारा धन समाने के बाद भी पेट का एक कोना खाली रह जाता है।

(102) संविधान संचालक है और संसद संचालित । प्राकृतिक न्याय के अनुसार संचालित संचालक का स्वरूप परिवर्तन नही कर सकता जबकि भारतीय संसद ने यह अधिकार अपने पास रख लिया है।

(103) वर्तमान स्थिति में श्शासन के अधिकारों को चुनौती देना चाहिये, आदेशो को नहीं ।

(104) अव्यवस्था त्रुटिपूर्ण संविधान का परिणाम होती है,कारण नही । क्योकि भारत मे संविधान का शासन है, शासन का संविधान नहों।

(105) न्याय और व्यवस्था एक दूसरे के पूरक है । न्याय विहीन व्यवस्था घातक है, व्यवस्था विहीन न्याय असफल । वर्तमान भारत में न्याय की अधिकाधिक मांग व्यवस्था को कमजोर कर रही है।

(106) कायरता की अपेक्षा हिंसा अच्छी होती है और हिंसा की अपेक्षा अहिंसा। वर्तमान गांधीवादी अहिंसा का ढ़ोंग करते हैं और होत ह कायर।

(107) स्वतंत्रता के बाद गांधीवादियों ने हमेशा समाज को गुमराह किया है ।

(108) महिला परिवार में बेटी, बहन, पत्नी, मां होती है। बेटी के रूप में संरक्षित, पत्नी के रूप में सहयोगी, मां के रूप में पूज्य होतो है। महिला पुरूष का भेद खतम करके सबको समान अधिकार दे देना चाहिये।

नुक्कड नाटक

नेता जी(कपिल सिव्वल) दादा जी (अन्ना) लोक जी ,(एक नागरिक) भइया जी (विपक्ष कें नेता) (नेता जी और भइया जी की वार्ता)
नेता जी – भइया जी, आप विपक्ष के नेता हो, किन्तु हो तो इसी संसद के अंग।यदि दादा जी की योजना अनुसार लोक का पावर बढा तो स्वाभाविक
है कि हम सबकी शक्ति घटेगी, जिसमें आप भी शामिल हो।
भइया जी– नेता जी, हम सब समझते है, किन्तु हम यह भी जानते है कि न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।
नेता जी– आपका कहने का मतलब क्या है?
भइया जी–मतलब तो साफ है कि अन्ना का आंदोलन सफल होगा ही नहीं। इस समय लोक इतना कमजोर है कि वह तंत्र को चुनौती दे ही नही
सकता ।
नेता जी – मानते तो हम भी यही रहे , किन्तु अप्रैल मे अन्ना के आंदोलन ने हमारी आखे खोल कर रख दी । एकाएक ऐसा दिखा कि हमारे हाथ पांव
फूलने लगे।
भइया जी– यह सच है , किन्तु यह भी तो सच है कि आपने कई गुना बडे रामदेव जी के आंदोलन को मिनटों मे कुचलकर अपनी ताकत दिखला दी। . आपने अन्ना को आभास करा दिया कि तंत्र एक बार भले ही धोखा खा गया हो, किन्तु वह लोक से किसी भी हालत में कमजोर नही हुआ है।
नेता जी– यह सब होते हुए भी आप इस समय दादा जी का समर्थन करके हमारे समक्ष भी खतरा उत्पन्न कर रहे हो तथा अपने पैरो पर भी कुल्हाडी . मार रहे हो
भइया जी – अपने पैरो पर कुल्हाडी मार रहे हो आप लोग। इस समय हम सब के सामने सबसे बडा खतरा मनमोहन सिंहकी इमानदारी है। यह आदमी . चुप रहता है किन्तु किसी का भला नही है । मनमोहन सिंह का मजबूत होना भविष्य के लिये आपके भी रास्ते बन्द कर रहा है और हमारे भी।
नेता जी– भइया जी मनमोहन सिंह को बदनाम करने से तो हमारी पार्टी कमजोर होगी जिसका हम पर विपरीत प्रभाव होगा। अन्ततोगत्वा, इसका लाभ . तो आप सबको ही होना है।
भइया– कैसी नासमझी की बात करते हो, नेता जी। मनमोहन सिंह की कमजोरी का परिणाम होगा राहुल गांधी की मजबूती। जब इतनी छोटी सी बात . नही समझते तो क्यो राजनीति करने चले हो।
नेताजी– फिर भी मनमोहन सिंह की गल्ती क्या है? वे तो सारा काम सोनिया जी से पूछ पूछ कर ही करते है।
भइया जाी– गल्ती यही है कि वे गलत नही है। पूरी दुनिया जानती है कि मनमोहन सिंह जी हर काम सोनिया जी से पूछ कर करते है, किन्तु आज . . मनमोहन सिंह की ऐसी हालत हो गई है कि सोनिया जी भी उन्हे कोई गलत काम कहने की हिम्मत नहीं कर रही।आप अच्छी तरह जानते . हो कि चुनाव कैसे जीता जाता है। यदि कुछ दिन इसी तरह चला तो अगले चुनाव के लिये कहॉ से तो आपके पास धन होगा और कहॉ से . हमारे पास
नेता जी– यह सब होते हुए भी इस समय तो हमारा पहला संकट है अन्ना का आंदोलन
भइया जी – बिल्कुल गलत।यदि हमे ईमानदार ही रहना होगा तो हम काहे को मनमोहन सिंह को साथ दे। फिर तो हम अन्ना का ही साथ दें कि कम
से कम मन मे पछतावा तो नही रहेंगा।
चर्चा के बीच मे ही दादा जी और लोक जी का प्रवेश । नमस्ते बाद चर्चा आगे बढती है।
नेता जी– दादा जी! आप कहते हो कि आपका आंदोलन सिर्फ भ्रष्टाचार पर रोक लगाने तक सीमित है, किन्तु सच बात यही नही। आप इस आंदोलन
के बहाने तंत्र और लोक के बीच शक्ति संतुलन को बिगाडना चाहते हो। अर्थात आप लोक को मजबूत करना चाहते हो तथा तंत्र को कमजोर
दादा जी– नही भाई! आपको भ्रम हो गया है । हमारी लडाई तो लोकपाल तक ही सीमित है। हमे अन्य बातों से मतलब नहीं।आप सोचो न कि यदि
हमारी कोई दूरगामी योजना होती तो क्या हमारे भइया जी अथवा साम्यवादी दल हमारा समर्थन करते?
नेता जी–भईया जी कितने आपके साथ ह और कितने हमारे साथ यह बाद मे पता चलेगा । मै अच्छी तरह जानता हूॅ कि तंत्र से जुडा कोईभी व्यक्ति
देर तक आपके साथ नही रह सकता क्योकि वह देख ही नही सकता कि तंत्र कमजोर हो और लोक मजबूत।
दादा जी– आप हमारे साथियो को बरगला रहे हो, नेता जी । हमारा जरा भी ऐसा मकसद नही है।
लोक जी–आपका मकसद क्या है यह आप जाने , दादा जी। हमारा तो मकसद यही है कि यह लडाई सिर्फ भ्रष्टाचार तक सीमित न रहकर लोक और
तंत्र के संबंधो का पुनर्निर्धारण करे।
भईया जी– मतलब।

लोक जी–मतलब साफ है कि यह संघर्ष यह तय करे कि भारत मे लोकतंत्र का मतलब लोक नियंत्रित तंत्र होगा या लोक नियुक्त तंत्र, जैसा अभी है । नेता जी और भइया जी यहा बैठे है। ये बतावें कि भारत मे सरकार कौन है?
नेता जी– इसमे क्या समस्या है? सारी दुनिया जानती है कि भारत मे लोकतंत्र है जिसमे लोक ही सरकार माना जाता है।
लोक जी– यदि लोक सरकार है तो आप अपने को गवर्मेंट कैसे कहते हो। गवर्मेंट और सरकार मे क्या अंतर है? कैसे कांग्रेस सरकार या भाजपा
सरकार बन जाती है जबकि जनता ही सरकार है। जब हम संसद को चुनते है तो संसद को क्या अधिकार है कि वह हमारी जगह किसी
और को सरकार घोषित कर दे।
भइया जी –अरे भाई ! हमे तो आप लोग ही चुनते हो तब हम सरकार बनते है। वास्तव मे तो हम आपके प्रतिनिधि होते है और आप सरकार
नेता जी– लोक जी! हमारे उपर संसद होती है और ससद के उपर संविधान। इस तरह हम अपने को सरकार कैसे कह सकते है?
लोक जी– और संविधान के उपर कौन है?
नेता जी– जनता अर्थात लोक ।
लोक जी – यदि संसद से उपर संविधान है तो संसद संविधान मे संशोधन कैसे कर सकती है?
नेता जी– तो , और कौन करेगा?
लोक – बताओ न आप ही कि संविधान बडा या संसद । आप लोगें ने लोक के साथ धोखा किया है कि संविधान को सर्वोच्च भी कहते रहे और उसमें . संशोधन के अधिकार भी अपने पास ही रख लिये। आप दोनो बताइये न कि लोक के पास वोट देने के अलावा भी कोई ऐसा अधिकार है क्या . जो संसदीय हस्तक्षेप से बाहर हो?
नेताजी– बताइये न आप लोग कि आपको क्या अधिकार चाहिये । हम आपको वह अधिकार देंगे।
लोक– और जब चाहोंगे तब हमारा अधिकार वापस भी ले लोगे। यही न है आज का लोकतंत्र । हम हो गये भिखारी और तुम हो गये दाता। तुम अपना . वेतन मनमाना बढा लोगे और हमारी राय भी नहीं लोगे और साथ ही सारा बढा हुआ पैसा हमसे ही वसूल करोगे। हमसे यदि सडक किनारे . की टयूब लाइट टूट जाय तो तुम हमें वर्षो कोर्ट मे दौडा कर हमसे कई गुना वसूल करोगें, किन्तु तुम यदि संसद मे सारा माइक तोड दो तो . माइक का पैसा हमसे ही वसूल होगा । तुम ने ऐसा अत्याचार किया है कितुम्हारे संसद के अंदर का अपराध न्यायालय से भी बाहर रहेंगा और . लोकपाल से भी। क्या तुम ऐसा नही सोचते हो कि तुमने लोक और तंत्र के बीच तंत्र के पक्ष मे गहरी खाई बना ली है ।
नेता – बहुत बडी बडी बाते कर रहे है लोक जी । हम कोई आसमान से नही टपके है। आपने ही हमे अपना प्रतिनिधि चुना है, आपने ही हमे अधिकार
दिये है।
लोक जी– झूठ ! बिल्कुल झूठ । हमने तुम्हे क्या क्या अधिकार दिये और क्या क्या हमारे पास है वह सूची कहॉ है। हमने संसद को जो अधिकार दिये . है उनमे से कोई अधिकार हम वापस चाहते है तो क्या प्रावधान है । हम तुम्हारी मर्जी के बिना संविधान सशोधन चाहते है तो क्या प्रावधान . है। साफ साफ बताओ कि तुम हमारे मैनेजर के रूप मे हो या मालिक के रूप मे या संरक्षक के रूप मे ।
नेता जी – इस प्रश्न का उत्तर तो भइया जी ही देंगे क्योकि वे ही ज्यादा जानकार है।
भइया जी– प्रश्न तो बहुत टेढा है । अच्छा हो कि इसका उत्तर दादा जी दे।
लोक –दादा जी क्यो दे उत्तर ? तुमलोग तंत्र हो, तुम संसद हो , तुम्ही सरकार हो, तुम्ही संविधान हो यहॉ तक कि तुम्ही भगवान हो तो कहो न कि
लोकतत्र मे लोक के अधिकार क्या है और तंत्र की सीमाएँ क्या है?
दादा जी– लोक जी, आपका प्रश्न असामयिक है।हमारी अन्तिम लडाई तो वही तक जायगी कि एक संविधान संशोधन समिति बने, जो संसद के
संविधान संशोधनों की समीक्षा करे और यदि उपयुक्त न हो तो संसद को फिर से विचार हेतु वापस करे और फिर भी यदि विवाद हो तो,
ऐसे संशोधन पर जनमत संग्रह हो। किन्तु हम अभी इस बात का नही उठा रहे और इसलिये ही अभी शुरूआत भ्रष्टाचार से ही करे तो ठीक
है। अभी सारे मुद्दे एक साथ उठाना ठीक नही
लोक जी– यदि ऐसा है तो दादा जी हम आपके साथ है।सोलह तारीख से आप जो शुरूआत किये है उसमे संपूर्ण भारत का लोक आपके साथ रहना
ही चाहिये । इसे आजादी की दूसरी लडाई का रूप देना ही चाहिये।
नेता जी – आप लोग आग से खेलने जा रहे हो , लोक जी। आपने साठ वर्ष तक हमारा विश्वास किया है। साठ वर्षो मे हमने आपको जाति–धर्म ,
गरीब–अमीर, औरत–मर्द के इतने भागों मे बांट दिया है कि आप अब एक हो ही नही सकते । हमारे पास इतनी ताकत है कि हम आपके
विरूद्ध ही खर्च करेंगे और आपसे ही वसूल करेंगे। अच्छा होगा कि आप हम पर विश्वास करे।
गायक – क्या विश्वास करे तुम पर । बहुत विश्वास कर लिया आज तक । तुमने हमारा जो हाल किया है वह इस गीत से सुन।

(गीत गाया जाता है)

राजनीति बन गई तवायफ, नेता हुये दलाल ।
ऐसे में क्या होगा भैया इस समाज का हाल ।।
संसद को एक पलंग समझ कर उस पर शयन किया,
संविधान को मान के चादर खींचा ओढ़ लिया,
आज तिरंगा बना हुआ है राजनीति को ढाल ।

ऐसे में क्या होगा भैया इस समाज का हाल ।।
अनाचार जो आज हो रहा लोकतंत्र के साथ,
सत्ता में हों या विपक्ष में सब का इस में हाथ,
किसी को भारत माता की इज्जत का नहीं खयाल ।
ऐसे में क्या होगा भैया इस समाज का हाल ।।
आज देश का नौजवान हैं कुंठित और निराश,
रहती अपने रोजगार की जिस को रोज तलाश,
सड़कों–सड़कों, दफ्तर–दफ्तर, घूम रहा बेहाल,
ऐसे में क्या होगा भैया इस समाज का हाल ।।
लेकतंत्र को लूटतंत्र है बना दिया गद्दारों ने,
लोक यहॉ कैदी बन बैठा संसद की दीवारों में,
लोक फंसा है कानूनों में, तंत्र है मालामाल ।
ऐसे में क्या होगा भैया इस समाज का हाल ।।
लोक मंच आह्वान कर रहा है कनहर के तीर,
नेता कर कानून सुधारो तभी मिटेगी पीर,
करो प्रतीक्षा अब आगे मत कहें मुरारी लाल ।
तब ही तो सुधरेगा भैया इस समाज का हाल ।।नेता जी तथा भइया जी– बन्द करो यह गीत । तुम लोगे की यह मजाल कि तुम इस तरह खुलेआम ऐसा गीत गाओ और विद्रोह की आवाज बुलन्द करों। हम ऐसा खतरनाक गीत बिल्कुल बरदास्त नही कर सकते ।
गायक– नही बन्द होगा यह गीत। यदि बन्द ही करना हो तो हमे ही तुम बन्द कर दो , किन्तु वहॉ भी हम यह गीत गाना बन्द नही करेंगे।
नेता जी – सिपाहियो इन्हे ले जाकर जेल मे डाल दो।
गायक– चलो चलो हम खुद चलते है , किन्तु हमारा गीत चलता रहेगा कि राजनीति बन गई तवायफ
समाप्त

उत्तरार्ध

पांच अगस्त से आठ अगस्त तक दिल्ली मे अग्रसेन भवन सेक्टर तेंतोस नोयडा मे अपने कुछ प्रमुख साथियों की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में कुल पचीस प्रमुख लोगों ने भाग लिया जिसमें श्रीरामकृष्ण जी पौराणिक, आचार्य पंकज, नरेन्द्र सिंह जी, घनश्याम जी, सुरेश जी, छबील सिंह सिसोदिया , द्विवेदी जी सदा विजय आर्य, प्रमोद कुमार वात्सल्य, ओमपाल जी, अविनाश भाई राकेश शुक्ल जी आदि शामिल रहें। बैठक मे चार मुद्दो पर विस्तृत चर्चा हुई । संचालन बजरंग मुनि जी ने किया ।

(1) अन्ना हजारे जी का आंदोलन और हमारी भूमिका
(2) नाटक लोक स्वराज्य का मंचन
(3) नौ अक्टूबर को जंतर मंतर पर दीप जलाकर दो दिवसीय सम्मेलन
(4) सात नवंबर से प्रस्तावित संपर्क यात्रा की रूपरेखा
(5) आर्थिक समीक्षा

बजरंग मुनि जी ने सुझाव दिया कि अन्ना जी का प्रस्तावित जन लोकपाल बिल आंदोलन ठीक दिशा में पहला कदम है। यह आंदोलन लोक और तंत्र के बीच दूरी को कम करेगा। अतः हमसब लोग इस आंदोलन का भरपूर समर्थन तथा सहयोग करें। फिर भी हम इस आंदोलन पर ही पूरी तरह निर्भर न हो जावें। सच्चार्द यह है कि लोक और तंत्र के बीच के संघर्ष के बीच कुल चार चरण होने है (1) लोक पाल बिल (2) राइट टू रिकाल आंदोलन (3) ग्राम गणराज्य आंदोलन (4) संविधान मुक्ति आंदोलन । पहला आंदोलन प्रारंभ है। जनता के अंदर राजनेताओं के प्रति निराशा , अविश्वास तथा घृणा का वातावरण है हमसब साथियो का कर्तब्य है कि हम ऐसे वातावरण को मदद तो करें किन्तु अपना लक्ष्य याद रखे कि हमारा लक्ष्य भ्रष्टाचार मुक्ति न होकर संविधान की मुक्ति है। हम भारतीय संविधान को उन शक्तियों से मुक्त कराना चाहते है जिन्होने संसदीय प्रणाली और संसद के नाम पर संविधान पर कब्जा कर रखा है।

चर्चा का दूसरा विषय था लोक स्वराज्य नाटक का मंचन । सभी सदस्यो ने नाटक के मंचन की स्वीकृति प्रदान की।

तीसरा प्रस्ताव था नौ दो दस अक्टूबर को दिल्ली मे दो दिवसीय सम्मेलन तथा नौ अप्रेल की अर्धवार्षिकी की यादगार । मुनि जी ने स्पष्ट किया कि स्वतंत्रता के बाद भारत मे पहली बार ऐसा हुआ है जब नौ अप्रेल को भारत सरकार ने लोक शक्ति के समक्ष डरकर समझौता किया। अन्ना जी का आंदोलन तो एक वहाना मात्र था जिसने विस्फोट किया। हम उस विस्फोट और उसके परिणाम की यादगार मे नौ अक्टूबर को दीप जलाकर कार्यक्रम प्रारंभ करे। दीप प्रज्वलन मे अन्ना मे जी की टीम के लोगों को भी शामिल करना चाहिये। उसके बाद दो दिन तक आगे की योजना पर चर्चा होगी। इस वार्षिक सम्मेलन मे अपने देश भर के साथियों को अधिक से अधिक संख्या मे आना चाहिये। नये लोग भी आवें तो अच्छा होगा। निवास तथा भोजन की व्यवस्था निःशुल्क रहेगी। आवागमन व्यय स्वयं करे अथवा आवश्यकता पडने पर ज्ञान तत्व वार्षिक का शुल्क संग्रह करके भी उपयोग कर सकते है ।

चर्चा का चौथा विषय था सात नवंबर से पचीस दिसम्बर तक की सम्पर्क यात्रा । इस संपर्क यात्रा के स्थान, तारिख और समय निश्चित किये गये। यात्रा की तैयारी स्थानीय संयोजक करेंगें। स्थानीय संयोजक एक स्थान की सूचना हमारे कार्यालय को देंगे तथा एक स्थानीय आयोजक का नाम भी भेंजेंगे। आयोजक कोई भी व्यक्ति किसी भी संस्था से जुडा हो सकता है । आयोजक हमारे लिये अपरिचित व्यक्ति भी हो सकता है । यात्रा मे एक दिन मे दो स्थानों पर कार्यक्रम हो सकते है । यात्रा के कार्यक्रम सीधे विचार मंथन से भी शुरू हो सकते है या किसी धार्मिक विधि से भी। धार्मिक विधि मे आयोजन आधे घंटे से अधिक न हो जिससे विचार मंथन को पर्याप्त समय बच सके । यदि कोई छोटा यज्ञ हो तो और भी अच्छा है अन्यथा अन्य धार्मिक पाठ भी संभव है। कुरान पाठ भो हो सकता है । हमारा उद्देश्य भावना और विचार को जोडना मात्र है।

चर्चा का पांचवा विषय था आर्थिक। आमतौर पर महसूस किया गया है कि जबसे मुनि जी ने अर्थ त्याग किया है तबसे कुछ आर्थिक कठिनाई आ रही है। मुनि जी का कभी मांगना स्वभाव नही रहा और न ही वे धन दान हेतु किसी को प्रेरित ही करते है।

आम तौर पर ज्ञानतत्व के पाठक भी महसूस नही कर पाते कि उन्हें क्या करना चाहिये। पहले मुनि जी खर्च कर पाते थे किन्तु अब सीमाएँ है । फिर सिद्धान्त रूप से भी किसी व्यक्ति के सहारे इतना बडा कार्यक्रम नही चल सकता। अतः अर्थ व्यवस्था से मुनि जी को पृथक होना चाहिये। गंभीर चर्चा हुई। मुनि जी ने भी सहमति व्यक्त की । तय हुआ कि भविष्य मे आय व्यय का सारा नियंत्रण एक समिति के पास हो जिसमे कोषाध्यक्ष नंदराम अग्रवाल , ग्राम सभा सशक्तिकरण संयोजक श्री राकेश जी शुक्ल तथा ज्ञान यज्ञ परिवार के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामकृष्ण जी पौराणिक हों । सारा हिसाब किताब कार्यालय मे हो तथा पारदर्शी हो। धन लेने के प्रयत्न भले ही न किय जाय किन्तु प्रेरित किया जाना चाहिये।

मुनि जी ने बताया कि वर्तमान मे मुख्य रूप से दो प्रकार के हिसाब है (1) ट्रस्ट का (2) ज्ञान तत्व का। ट्रस्ट का आय व्यय अलग तथा ज्ञान तत्व का अलग होना चाहिये। वर्तमान मे ट्रस्ट को उसके कोष पचीस लाख रूपये का व्याज पचीस हजार रूपया मासिक तथा पांच सदस्यो का पांच हजार रूपया मिलाकर कुल तीस हजार रूपया मासिक आय है। इसी आय से पूरा खर्च चलता है। मीटिंग मे ही दो नये सदस्यो श्री पंकज गोयल, उनकी पत्नी श्री मती गोयल ने छः माह का बारह हजार रूपया दिया। अपने ट्रस्टी सदस्य बिजनौर के डा0 प्रकाश ने भी पांच हजार रूपया दिया । यह सत्रह हजार रूपया पौराणिक जी को दे दिया गया । भविष्य मे ट्रस्ट का धन तथा हिसाब यह तीन सदस्यीय समिति ही रखेगी। ट्रस्ट का कोई भी सदस्य इस हिसाब को देख सकता है। ट्रस्ट को प्राप्त कोई भी धन अब मुनि जी के पास न जाकर सीधे कार्यालय के कोषाध्यक्ष नंदराम जी के पास जायगा जो राकेश शुक्ल जी के निर्देशन पर खर्च होगा तथा पौराणिक जी जिसका निरीक्षण करते रहेगे।

एक दूसरा खाता ज्ञान तत्व को होगा। इसमे ज्ञान तत्व के निमित्त प्राप्त धन अथवा ट्रस्ट के अतिरिक्त प्राप्त धन जमा होगा तथा ज्ञान तत्व पर होने वाला खर्च इसमे से ही होगा। मुनि जी ने घोषित किया था कि ज्ञान तत्व के लिये उनके जिवित रहते तक पचीस हजार रूपया प्रतिमाह मिलता है। अब वह पचीस हजार रूपया प्रतिमाह कोषाध्यक्ष को मिलता रहेगा जो ज्ञान तत्व विस्तार के काम आवेगा। मुनि जी ने यह भी घोषित किया कि जब तक ज्ञान तत्व आर्थिक रूप से सक्षम नही दिखता तब तक मुनि जी का परिवार अस्थायी रूप से आवश्यकतानुसार पचीस हजार रूपया मासिक अतिरिक्त रूप से ज्ञान तत्व को देंगे जो कोषाध्यक्ष जी को मिलता रहेगा । इस तरह वर्तमान मे ज्ञान तत्व के लिये बाहर से प्राप्त धन के अतिरिक्त पचास हजार रूपया मासिक मिलता रहेगा । ज्ञान तत्व का सारा हिसाब किताब सबके लिये खुला रहेगा।

श्री महेश जाखड जी तथा श्री शंकर लाल जी सीवर ने प्रश्न उठाया कि हमारा मजबूत संगठन नही बन पा रहा है तथा इस वर्ष अपने दो तीन साथी कुछ असंतुष्ठ क्यो है । मुनि जी ने बताया कि ज्ञान यज्ञ परिवार न तो कोई संगठन है न ही संगठन बनाने मे रूचि रखता है। ज्ञान यज्ञ परिवार के साथ जुडे संगठन व्यवस्था परिवर्तन मंच लोक स्वराज्य संघ या ग्राम सभा सशक्तिकरण अभियान है। उनके सदस्यो मे कोई टूट जुट होती है तो इसका उत्तर ज्ञान यज्ञ परिवार नही दे सकता । ज्ञान यज्ञ परिवार के साथी तो सभी एकजुट है। अपने कुछ साथियों को कुछ परेशानी हुई है। पहले खर्च करने की स्वतंत्रता थी । अब मुनि जी के अलग होने से खर्च मे कुछ रूकावट है। स्वाभाविक है कि एक दो साथी इससे परेशान हुए हो किन्तु यह हम सबकी भी मजबूरी है और मुनि जी की भी । ऐसे धन निर्भर साथियो को भी मजबूरी समझनी चाहिये। इस चर्चा के बाद शंकर लाल जी सीवर ने अपने पास से पांच सौ रूपये वापस भी कर दिये तथा आश्वासन दिया कि भविष्य मे वे इन विषयो पर और अधिक गंभीर रहेंगे।

इस तरह यह तीन दिनो की बैठक सम्पन्न हुई सात नवम्बर से पचीस दिसम्बर तक का कार्यक्रम विवरण इस प्रकार है–

दिनांक			संयोंजक		
8/11				दोपहरबाद	नोएडा – घनश्यामजी
9/11	पूर्व	गाजियाबाद	अजय भाई	पश्चात	मेरठ – ओमपाल जी
10/11	पूर्व	दौराला	ओमपाल जी	पश्चात	विजनौर – डाक्टर प्रकाश
11/11	पूर्व	पुरैनी बाजार	धर्मवीर शास्त्री	पश्चात	नजीबाबाद– डाक्टर प्रकाश
12/11	पूर्व	.....		पश्चात	मुजफ्फर नगर – होतीलाल शर्मा
13/11	पूर्व	देहरादून	विजय शंकर शुक्ल	पश्चात	हरिद्वार विजय शंकर शुक्ल
14/11	पूर्व	सहारनपुर	रतिराम जी प्रधान	पश्चात	अम्बाला– अर्पित अनाम
15/11	कभी भी	शिमला	बलवंत यादव जी	पश्चात	.....
16/11	पूर्व	शेरपुर	संजय भाई	पश्चात	..... इशम सिंह जी
17/11	पूर्व	.....	इशम सिंह जी	पश्चात	.....रणवीर शर्मा जी
18/11	पूर्व	.....	अशोक गाडिया जी	पश्चात	..... गाडिया जी
19/11	पूर्व	.....	गाडिया जी	पश्चात	..... गाडिया जी
20/11	पूर्व	जयपुर	ध्रुव सत्य अग्रवाल	पश्चात	.....
23/11	पूर्व	पिलखुआ	छवील सिंह सिसोदिया	पश्चात	बनबोई नरेन्द्र जी
24/11	पूर्व	धनारी	रिषिपाल जी	पश्चात	सहावर – इस्लाम अहमद फारूकी
25/11	पूर्व	बरेली	राजनारायण जी	पश्चात	बरेली – राज नारायण जी
26/11	पूर्व	फतेहपुर	राम भूषण सिंह जी	पश्चात	जहानाबाद – वंशलाल सचान
27/11	पूर्व	बाराबंकी	ओम प्रकाश प्रकाश	पश्चात	रूदौली कैलाश नारायण तिवारी
28/11	पूर्व	गोंडा	चित्रान्गद श्रीवास्तव	पश्चात	.....
29/11	पूर्व	गोरखपुर	ओंकार तिवारी जी	पश्चात	कप्तानगंज – उमाशंकर यादव
2/12		.....			डालटंनगंज – नवल तुलस्यान
3/12	पूर्व	बोकारो	कृष्णलाल रूंगटा	पश्चात	धनबाद जय किशन जी
4/12	.....				खगडिया श्री टी पी जालान
5/12	.....				नालंदा आर्य जी
6/12	.....				आरा आचार्य धर्मेद्र
7/12	पूर्व	भोरे	महेश भाई	पश्चात	देवरिया चंद्रिका जी
8/12	पूर्व	बिल्थरा	चंद्र प्रकाश राय	पश्चात	मउ कृष्णदेव जी उमा पति जी

9/12	पूर्व	गाजीपुर	रामचंद्र जी दुबे	पश्चात	वाराणसी	अशोक त्रिपाठी जी
10/12	.....				चोपन	देवेन्द्र शास्त्री जी
11/12	पूर्व	ओबरा	नरेन्द्र नीरव जी	.....		
..						
13/12	पूर्व	रायपुर	अजीम भाई	पश्चात	रायपुर – वर्मा जी	
14/12	पूर्व	भानुप्रतापपुर	वैधराज आहुजा	पश्चात	भानुप्रताप पुर	वैधराज आहुजा
15/12	पूर्व	मटंग	पंथराम वर्मा	पश्चात	दुर्ग	डा0 कोठारी
16/12	पूर्व	गोन्दिया	मधुसूदन जी	पश्चात	वर्धा	सदाविजय आर्य
18/12	पूर्व	इंदौर	जसवंत राय जी	पश्चात	इन्दौर	राजेन्द्र तिवारी भारतीय
19/12	पूर्व	उज्जैन	.....		भोपाल	अशोक राजवैध
20 /12	पूर्व	सागर	डा0 प्रभु	पश्चात	छतरपुर	जे0पी0 गुप्ता
21/12	पूर्व	रीवा	दुर्गेश जी	पश्चात	मनगवां	अभ्युदय जी
22/12	पूर्व	सीधी	श्रुतिवंतु जी	पश्चात	बुढार	अभ्युदय जी
23/12	पूर्व	अनूपपुर	मुन्नी बाई	पश्चात	अनुपपुर	सीताराम शर्मा
24/12	पूर्व	जशपुर	कृपाशंकर सिंह जी	पश्चात	सीतापुर	खुशीराम जी
25/12		रामानुजगंज				

नोट– (1) गुजरात, कर्नाटक, आन्ध्र, महाराष्ट्र की सम्पर्क यात्रा ट्रेन से फरवरी मे संपन्न होगी।
(2) यदि किसी साथी को कोई असुविधा हो तो फोन से शीघ्र सूचना दे दे जिससे वैकल्पिक व्यवस्था की जा सके
(3) कोई साथी घोषित स्थान बदल कर किसी अन्य शहर या गांव मे रखना चाहें तो संभव है। बदलकर शीघ्र सूचना दें।
(4) आप किस जगह पर कार्यक्रम रखेगें उसकी जानकारी यथा शीघ्र दे जिससे ज्ञान तत्व मे घोषित कर सके।
(5) आप आयोजक संस्था अथवा व्यक्ति का नाम भी शीघ्र बता दे।
(6) नौ दस अक्टूबर की दिल्ली बैठक मे भी आप विशेष जानकारी प्राप्त कर ले।